مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Ameere Ahle Sunnat Ka Bachpan (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 447
Weekly Booklet : 447

अमीरे अहले सुन्नत का

(क़िस्त : 1)

बचपन

सफ़हात : 36

पहले इसे पढ़िये

अल्लाह पाक ने इन्सान को अशरफ़ुल मख़्लूक़ात (यानी मख़्लूक़ात में सब से बेहतर) बनाया है, इन्सान की ज़िन्दगी मुख़्तलिफ़ अदवार मसलन बचपन, लड़कपन, जवानी, अधेड़पन और बुढ़ापे से गुज़रती है और हर मन्ज़िल का रंग अलग अलग है। उ़मूमन हर इन्सान को अपने बचपन का ज़माना निहायत सुहाना और दिलकश महसूस होता है, इन्सान उ़म्र के किसी भी हिस्से में पहुंच जाए उस का दिल पीछे मुड़ कर बचपन की गलियों की जानिब ज़रूर जा निकलता है क्यूंकि वोह ज़माना ऐसा था जिस में न हिसाबो किताब था न दुनिया की उल्झनें, फ़िक्रें कम और ख़ुशियां ज़ियादा थीं। बचपन में छोटी छोटी चीज़ें बड़ी बड़ी ख़ुशी का सबब बन जाती थीं, कभी किसी खिलौने पर दिल मचलता था तो कभी किसी मीठी चीज़ पर चेहरा खिल उठता था। येही सादगी और बे फ़िक्री बाद के ज़माने में याद बन कर दिल को खींचती है। बचपन की यादें सिर्फ़ वाक़िआ़त नहीं बल्कि ज़िन्दगी के हसीन लम्हात का ख़ज़ाना होती हैं। मिट्टी में खेलना, किसी मामूली सी चीज़ पर ख़ुश हो जाना और कभी किसी छोटी सी बात पर रो देना, येह सब बातें बल्कि पूरा बचपन बड़े हो कर इन्सान को यूं याद आता है जैसे वोह एक ठन्डी हवा के झोंके की त़रह़ गुज़र गया हो। इसी लिये बचपन की ख़ुशगवार यादों से सुकून मिलता है और बचपन की यादें इन्सान की शख़्सिय्यत पर भी असर डालती हैं। इन्सान जब ज़िन्दगी के तजरिबात से गुज़रता है तो उसे मालूम होता है कि अस्ल सुकून और ख़ुशी तो उसी सादगी में थी जिसे वोह बचपन में मामूली समझता था। बचपन ख़त्म तो हो जाता है मगर दिल की किताब से कभी नहीं मिटता बल्कि इस की यादें वक़्त के साथ साथ क़ीमती महसूस होने लगती हैं, इन्सान अपने बच्चों को बचपन के वाक़िआ़त सुना कर सिखाने की कोशिश करता है क्यूंकि छोटे बच्चों की ज़िन्दगी के इब्तिदाई साल बक़िय्या ज़िन्दगी के लिये बुन्याद की हैसिय्यत रखते हैं। बच्चे

जो कुछ बचपन में सीखते हैं वोह ज़िन्दगी भर उन के दिलो दिमाग़ में रासिख़ (यानी पक्का / मज़बूत) रहता है, बचपन की यादों से एक सबक़ येह भी मिलता है कि ख़ुशी बड़ी चीज़ों में नहीं बल्कि दिल के सुकून और सादा लम्हों में होती है। जिस शख़्स का बचपन नेकी, ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिमीन, पाकीज़ा सोच और अच्छे माहौल में गुज़रा हो, वोह अक्सर अपनी गुफ़्तगू में मुस्बत सोच का इज़हार करता है और वोह अपने बच्चों, शागिर्दों और महब्बत रखने वालों को इसी चीज़ का दर्स देता है और बाज़ लोग अपने बचपन की महरूमियों को याद कर के अ़ज़्म करते हैं कि दूसरों के लिये आसानियां पैदा करेंगे, यूं बचपन की यादें इन्सान के किरदार की तामीर में भी हिस्सा डालती हैं।

बानिये दावते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बचपन और लड़कपन के ह़ालात व वाक़िआ़त तलाश कर के येह रिसाला तय्यार किया गया है, यक़ीनन येह नहीं कहा जा सकता है कि इस रिसाले में अमीरे अहले सुन्नत का मुकम्मल बचपन बयान हो गया है, अमीरे अहले सुन्नत से महब्बत करने वालों के लिये इन वाक़िआ़त से ह़ासिल होने वाले दर्स भी इस रिसाले में शामिल किये गए हैं। उम्मीद है कि येह रिसाला वालिदैन के लिये बच्चों के किरदार व अख़्लाक़ की बेहतरीन तरबियत में मुआ़विन साबित होगा। अल्लाह पाक अमीरे अहले सुन्नत को दराज़िये उ़म्र बिल ख़ैर अ़ता फ़रमाए, आप की और आप के वालिदैन और पूरे ख़ानदान की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमाए और हमें आप के नक़्शे क़दम पर चलते हुए नेकी की दावत आ़म करने और अपने बच्चों की क़ुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ दुरुस्त तरबियत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلَّى اللهُ عليهِ واٰلهٖ وسلَّم

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत

अबू मुह़म्मद त़ाहिर अ़त्तारी मदनी عُفِيَ عنہ

20 शाबान शरीफ़ 1447, 07 फ़रवरी 2026

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

अमीरे अहले सुन्नत का बचपन (क़िस्त : 1)

दुआए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या अल्लाह पाक ! जो कोई 36 सफ़हात का रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत का बचपन**" पढ़ या सुन ले उसे अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बचपन शरीफ़ के सदक़े नेक नमाज़ी और सच्चा आशिक़े रसूल बना और उस से हमेशा हमेशा के लिये राज़ी हो जा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

आशिक़े दुरूदो सलाम (वाक़िआ)

हज़रते अल्लामा अब्दुल वह्हाब शारानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "शैख़ नूरुद्दीन शौनी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने मुझे बताया कि मैं बचपन में "शौनी" (नामी शहर) में जानवर चराया करता था, मुझे रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ने से इस क़दर महब्बत थी कि मैं अपना खाना बच्चों को दे कर उन से कहता : येह खाना खा लो फिर हम सब मिल कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर **दुरूद शरीफ़** पढ़ेंगे। चुनान्चे हम दिन का अक्सर हिस्सा रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर **दुरूदे पाक** पढ़ते हुए गुज़ार देते। (الطبقات الکبری للشعرانی، 2/233)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।" اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

ऐ मदीने के ताजदार सलाम ऐ ग़रीबों के ग़मगुसार सलाम
तेरी इक इक अदा पे ऐ प्यारे सौ दुरूदें फ़िदा हज़ार सलाम

(ज़ौक़े नात, स. 170)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

वालिद की याद ने रुला दिया (वाक़िआ)

एक बच्चे के वालिद उस की विलादत के कुछ ही अ़र्से बाद फ़ौत हो गए थे। एक दिन जब वोह बच्चा घर के बरआमदे की त़रफ़ जा रहा था तो उस के दिल में ख़याल आया : "**सब बच्चे अपने वालिद के पास जाते हैं, उन से लिपटते हैं, वोह उन्हें गोद में ले कर प्यार करते और खाने की चीज़ें, खिलौने वग़ैरा दिलाते हैं। काश ! मेरे भी वालिद (ज़िन्दा) होते, मैं भी उन से लिपटता और वोह मुझे प्यार करते**" इस ख़याल का दिल में आना था कि बच्चे का नन्हा सा दिल भर आया और वोह बिलक बिलक कर रोने लगा, रोते हुए छोटे भाई की आवाज़ सुन कर बड़ी बहन जल्दी से आईं और अपने नन्हे यतीम भाई को गोद में ले कर दिलासा दे कर बहलाने लगीं।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह छोटा बच्चा कोई और नहीं हमारे प्यारे अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه थे चूंकि आप की विलादत के तक़रीबन एक दो साल के अन्दर ही वालिदे मोह़तरम सफ़रे ह़ज पर मिना शरीफ़ में लू लगने के बाइ़स शहीद हो गए थे, यूं आप ने ह़ालते यतीमी में बचपन गुज़ारा। इस वाक़िए़ से एक सबक़ येह ह़ासिल होता है कि हमें चाहिये कि अपने अ़त़राफ़ में मौजूद यतीम बच्चों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आएं क्यूंकि वालिद या वालिदा जैसी अ़ज़ीम नेमत के दुनिया से रुख़्सत हो जाने के बाद उन जैसा प्यार देने वाला शायद दुनिया में कोई नहीं होता। बचपन, लड़कपन और बिलख़ुसूस जवानी में जब मर्ह़ूम वालिद या वालिदा की याद आती है तो आंखें नम हो जाती हैं। जिन के वालिदैन फ़ौत हो गए हैं उन्हें सब्रो अज्र से नवाज़ कर अल्लाह पाक उन के वालिदैन को जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए और जिन के वालिदैन ह़यात

(यानी ज़िन्दा) हैं उन्हें अपनी औलाद की ख़ैर से ख़ुशियां देखना नसीब फ़रमाए, औलाद को दुनिया व आख़िरत में अपने वालिदैन की आंखों की ठन्डक और बे हिसाब बख़्शिश का ज़रीआ़ बनाए। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

बचपन में वालिदे मोहतरम और जवानी में पहले घर का सरबराह और अहम तरीन सहारा बड़ा भाई और फिर एक डेढ़ साल ही में अमीरे अहले सुन्नत की वालिदए मोहतरमा भी फ़ौत हो गईं तो आप के दिल पर ग़म का पहाड़ टूट गया और आप ने बारगाहे रिसालत में बड़े दर्द भरे अन्दाज़ से अश्आ़र की सूरत में कुछ इस त़रह़ फ़रियाद की :

घटाएं ग़म की छाईं दिल परेशां या रसूलल्लाह तुम्हीं हो मुझ दुखी के दुख का दरमां या रसूलल्लाह
मैं नन्हा था, चला वालिद, जवानी में गया भाई बहारें भी न देखीं थीं चली मां या रसूलल्लाह
ब जुज़ तू नीस्त मूनिस नीस्त हमदम रह़मते आ़लम नज़र कुन जानिबे मा बद नसीबां या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

हर बाल के बदले एक नेकी

जिस बच्चे या बच्ची का बाप फ़ौत हो जाए उस को यतीम कहते हैं। जब बच्चा बालिग़ या बच्ची बालिग़ा हो गई (लड़का 12 और 15 साल के दरमियान बालिग़ और लड़की 9 और 15 साल के दरमियान बालिग़ा होती है) तो अब यतीम के अह़काम ख़त्म हो गए। हो सके तो किसी यतीम के सर पर शफ़क़त से हाथ फेरिये कि हाथ के नीचे जितने बाल आएंगे हर बाल के बदले एक एक नेकी मिलेगी।

(مسند امام احمد، 8/272، حدیث:22215)

उम्मत के ग़मख़्वार आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लड़का यतीम हो तो उस के सर पर हाथ फेरने में आगे की त़रफ़ ले आए और बच्चे का बाप हो (यानी बच्चा यतीम न हो) तो हाथ फेरने में गर्दन की त़रफ़ ले जाए।

(معجم اوسط، 1/351، حدیث:1279)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यतीम पर एक लम्हे की शफ़्क़त और चन्द तसल्ली भरे बोल उस के दिल के ज़ख़्मों पर वोह मरहम रख सकते हैं जो दुनिया की बड़ी से बड़ी दौलत न रख सके। यतीम के साथ महब्बत, शफ़्क़त और रहम दिली न सिर्फ़ एक अख़्लाक़ी ज़िम्मेदारी है बल्कि अल्लाह पाक की रिज़ा की निय्यत हो तो बहुत बड़ी नेकी भी है।

विलादते अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं कि मेरी बड़ी बहन ने मुझे बताया कि 26 रमज़ान शरीफ़ अस्र के बाद (यानी 27 रमज़ानुल करीम शबे क़द्र के पुरकैफ़ लम्हात आने से कुछ देर पहले) मुस्तफ़ा मस्जिद के क़रीब बम्बई बाज़ार खारादर, कराची में मेरी विलादत हुई। अमीरे अहले सुन्नत की उम्र जब छे माह की हुई तो आप के वालिदैन ओल्ड सिटी एरिया में बादामी मस्जिद के क़रीब गऊगली में शिफ़्ट हो गए। ख़ुश क़िस्मती से घर से मस्जिद का फ़ासिला इतना था कि घर के मेन दरवाज़े से मस्जिद शरीफ़ की ज़ियारत हो जाती थी। बस येही वोह घर और गलियां थीं जहां अमीरे अहले सुन्नत का बचपन, लड़कपन और तक़रीबन जवानी गुज़री। बर्रे सग़ीर (पाको हिन्द) की तक़्सीम से पहले के वक़्त से बना येह घर कंस्ट्रक्शन के एतिबार से इन दिनों भी काफ़ी मज़बूत था। राक़िमुल हुरूफ़ (अबू मुहम्मद ताहिर अ़त्तारी عُفِیَ عَنْہ) का चन्द साल पहले दावते इस्लामी के चैनल की टीम के साथ इस घर की रिकॉर्डिंग के लिये जाना हुवा तो अमीरे अहले सुन्नत का रिहायशी, सेकन्ड फ़्लोर मुकम्मल तौर पर ख़स्ता हो चुका था, उस पर जाने का कोई रास्ता नहीं था बल्कि सिर्फ़ उस के चारों तरफ़ दीवारें बाक़ी थीं, फ़र्स्ट फ़्लोर के ऊपर की छत भी उस वक़्त बाक़ी न थी, अलबत्ता एक इस्लामी भाई ने फ़र्स्ट फ़्लोर तक जाने के लिये हमारे लिये कुछ रास्ता बनाया तो येह देख कर मैं और वहां मौजूद

डायरेक्टर इस्लामी भाई हैरान रेह गए कि इन ख़स्ता दीवारों के अन्दर लकड़ी के सुतून पैवस्ता (यानी जुड़े) थे जो उस बिल्डिंग की कंस्ट्रक्शन में इस्तिमाल हुए थे। हो सकता है इस इमारत को बने हुए सौ साल हो गए हों मगर मौजूदा तामीर होने वाली इमारात से येह इमारत अब भी ज़ियादा ही मज़बूत थी। अब बनने वाली कई इमारतों (Buildings) के मटेरियल वग़ैरा में वक़्त के साथ साथ मिलावट और कोताही की सूरतेहाल की वज्ह से वक़्तन फ़ वक़्तन ख़बरें सुनने को मिलती हैं कि चन्द माह या दो चार साल पहले बनी इमारत गिर गई। अल्लाह पाक बिल्डर्ज़, कंस्ट्रक्शन ज़िम्मेदारान और मिस्त्री मज़दूर समेत सब को नेक हिदायत अ़ता फ़रमाए कि वोह किसी भी इन्सान की जान के साथ कभी न खेलें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

गऊ गली (मीठादर, कराची) वाले घर की यादें

अमीरे अहले सुन्नत के गऊ गली वाले घर की आप की हयात से कई यादगारें वाबस्ता हैं। येह दो मन्ज़िला इमारत (यानी बिल्डिंग, ग्राउंड प्लस टू) है। सब से पहली यादगार येह है कि येही वोह घर है जहां आप के वालिदे मोहतरम ने अपनी फ़ैमिली के साथ कुछ अ़र्सा गुज़ारा और फिर यहीं से सफ़रे हज के लिये रवाना हुए। यूं अमीरे अहले सुन्नत के वालिदे मोहतरम की निस्बत से येह एक अहम यादगार है। इसी घर में अमीरे अहले सुन्नत के बड़े भाई अ़ब्दुल ग़नी मर्हूम की शादी हुई तो वोह अपनी फ़ैमिली के साथ एक कमरे में रहते और दूसरे कमरे में अमीरे अहले सुन्नत अपनी वालिदए मोहतरमा और बहनों के साथ मुक़ीम थे। बड़े भाई के इन्तिक़ाल के बाद वालिदा ग़म में घुलती रहीं और उन्हों ने भी इसी घर में वफ़ात पाई जिस का मुकम्मल वाक़िआ "**फ़ैज़ाने उम्मे अ़त्तार**" रिसाले में पढ़ा जा सकता है, मज़ीद आगे बढ़ें तो अमीरे अहले सुन्नत की शादी ख़ाना आबादी भी

इसी घर में हुई और अमीरे अहले सुन्नत का वलीमा अपने पड़ोसी मर्हूम हाजी हारून के घर में ग्राउंड फ़्लोर पर निहायत सादगी के साथ हुवा था।

अमीरे अहले सुन्नत की सब से पहली मस्जिद

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक के करम से मैं ने गऊ गली मीठादर, ओल्ड सिटी एरिया, कराची के जिस महल्ले में होश सम्भाला वहां की मस्जिद ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के चाहने वालों की थी। इस मस्जिद का नाम "**बादामी मस्जिद**" है। उस वक़्त मस्जिद शरीफ़ की जगह कम थी मगर अब बड़ी आ़लीशान इ़मारत की सूरत में है। येह अ़लाक़े की बड़ी बा रौनक़ मस्जिद थी, इस मस्जिद में ग्यारहवीं शरीफ़ में ग्यारह, बारहवीं शरीफ़ में बारह और रजब शरीफ़ में ख़्वाजए ख़्वाजगां ह़ज़रते मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की याद में छे बयानात होते, आख़िर में सलातो सलाम और नियाज़ में बिस्किट, केक और मिठाई की छोटी छोटी बूंदियां तक़्सीम होती थीं। अगर कोई बड़ी मह़फ़िल होती तो मलाई खाजे (एक मख़्सूस क़िस्म की मिठाई) वग़ैरा बटते। बचपन से ही इस मस्जिद से नातों और اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله की आवाज़ें कानों में रस घोलती रहीं। इस मस्जिद में 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक की ज़ियारत लाइन लगा कर करवाई जाती थी, आप ने भी बारहा इस तक़रीबे पुर सई़द में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की। मस्जिद में रमज़ानुल करीम के आख़िरी दिनों में अलवदाअ़ पढ़ी जाती और बड़ी रातों मसलन जश्ने विलादत वग़ैरा में लाइटिंग की जाती थी। अमीरे अहले सुन्नत की वालिदए मर्हूमा आप को फ़ज्र की नमाज़ के लिये उठा कर भाई के साथ मस्जिद भेजा करतीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! यूं बचपन ही से न सिर्फ़ मस्जिद का रास्ता देखने को मिला बल्कि "या रसूलल्लाह" की सदाएं, "या ग़ौसे आज़म" के नारे सुनने और जश्ने विलादत की धूमें देखने के साथ साथ अलवदाअ़ माहे रमज़ान पढ़ने, सुनने का मौक़अ़ भी ह़ासिल हुवा।

अमीरे अहले सुन्नत का मदनी मश्वरा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बच्चा सादा लौह़ (यानी सादा तख़्ती की मानिन्द) होता है, सादा तख़्ती पर जो लिखा जाए वोह नक़्श हो जाता है। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "حِفْظُ الْغُلَامِ كَالنَّقْشِ فِي الْحَجَرِ" तर्जमा : छोटे बच्चे का याद करना पत्थर पर लकीर की त़रह़ है। (الفقیہ و المتفقہ، 2/180، رقم:820ملتقطاً) क्यूंकि छोटे बच्चे की क़ुव्वते इदराक (यानी मेमोरी, याद दाश्त और समझने की त़ाक़त) मज़बूत होने की वज्ह से वोह जो भी याद करता है उस के ज़ेहन में इस त़रह़ मह़फ़ूज़ हो जाता है जैसे पत्थर पर निशान मह़फ़ूज़ हो जाता है। (فیض القدیر، 3/515، تحت الحدیث:3733) اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! बचपन में अमीरे अहले सुन्नत के ज़ेहन में नात व दुरूद वाला माह़ौल ऐसा रचा बसा कि अब तक न जाने कितनों को मदनी रंग चढ़ा दिया है। एक मुसलमान के लिये मह़ल्ले की मस्जिद की बड़ी अहमिय्यत है, पांचों नमाज़ों वरना कम अज़ कम नमाज़े जुमुआ और ईदैन वग़ैरा में अपनी क़रीबी मस्जिद में आना जाना होता ही है और इन्सान की मज़हबी सोच में घर की क़रीबी मस्जिद का बड़ा किरदार (Role) होता है। मह़ल्ले की मस्जिद में आ़शिक़ाने रसूल की इन्तिज़ामिया हो या इमाम आ़शिक़े रसूल हो तो वोह इ़श्क़े रसूल के जाम भर भर कर तक़्सीम करेगा और अगर मुआ़मला इस के उलट हुवा तो असर भी उल्टा ही पड़ेगा और अ़क़ाइद में ख़राबी हो सकती है जो कि जहन्नम के गहरे गढ़े में गिरने का बाइ़स बन सकती है। अल्लाह पाक इस से पहले ईमान व आ़फ़िय्यत के साथ मदीने में शहादत अ़त़ा फ़रमाए। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बारहा मदनी मुज़ाकरों वग़ैरा में आ़शिक़ाने रसूल को येह क़ीमती मदनी फूल अ़त़ा फ़रमाया है कि जब भी घर बदलने या नया लेने की सूरत हो तो सब से पहले येह देखिये कि उस घर की क़रीबी मस्जिद के लोग किस त़रह़ के हैं, अगर वोह मस्जिद आ़शिक़ाने रसूल और हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के चाहने वालों की

होगी तो اِنْ شَآءَاللّٰه आप और आप के बच्चों में इश्क़े रसूल और महब्बते औलिया की शम्अ रौशन रहेगी वरना ख़ुदा नख़्वास्ता अगर मुआमला इस के बरअक्स हुवा तो नतीजा बड़ा भयानक हो सकता है, अक़्लमन्द के लिये इशारा काफ़ी है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5 / 21)

अमीरे अहले सुन्नत का स्कूल

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इब्तिदाई तालीम अपने घर के क़रीब खारादर के अलाक़े में एक मशहूर स्कूल "**मदरसा इस्लामिया नम्बर 2**" से हासिल की। येह स्कूल गुजराती मीडियम था और आप ने दुनियावी तालीम आठवीं क्लास (यानी मिडल) तक हासिल की। आप के स्कूल में एक उस्ताद के हाथ में उमूमन डन्डा होता था। उन का मामूल था कि वक़्तन फ़ वक़्तन स्कूल में चक्कर (यानी राउंड) लगाते और ज़ोर से डन्डा दीवार पर मारते जिस की दहशतनाक आवाज़ सुन कर बच्चे कांप उठते, इस रोब व दबदबे के सबब किसी बच्चे के लिये देर से आना या छुट्टी करना तक़रीबन ना मुम्किन था अगर्चे वोह उस्ताद अक्सर डन्डा इस्तिमाल नहीं करते थे मगर उस की मौजूदगी और ख़ौफ़ ही काफ़ी था।

(सिल्सिलए अमीरे अहले सुन्नत की कहानी, क़िस्त : 8। सिल्सिला दिलों की राहत, क़िस्त : 5)

मार नहीं प्यार

ऐसे ही स्कूल लाइफ़ में एक और उस्ताद से आप का वासिता पड़ा उन का भी बड़ा रोब था, वोह क्लास में आते और किसी को देख कर मुस्कुराते, अगर जवाबन शागिर्द भी मुस्कुराता तो वोह उस की पिटाई लगा देते। अल्लाह पाक उन्हें मुआफ़ करे, क्यूंकि उस्ताद भी शागिर्द को नाहक़ नहीं मार सकता। ऐ काश ! उन्हों ने जिस बच्चे को भी ज़ुल्मन मारा हो उस से मुआफ़ी मांग ली हो। शायद ऐसे ना

समझ उस्तादों ही की वज्ह से हुकूमत ने स्कूल में डन्डा रखने पर पाबन्दी लगा कर येह नारा बुलन्द किया है कि "**मार नहीं प्यार**"। येह ह़क़ीक़त है बच्चा मार से इस क़द्र नहीं समझता जिस क़द्र प्यार से समझ लेता है। अल्लाह पाक सब को अ़क़्ले सलीम (यानी समझने वाली अ़क़्ल) अ़ता फ़रमाए।

अमीरे अहले सुन्नत और सालाना इम्तिह़ानात की तय्यारी

अल्लाह पाक ने अमीरे अहले सुन्नत को बचपन ही से बा कमाल ह़ाफ़िज़ा अ़ता फ़रमाया है, आप ख़ुद फ़रमाते हैं : इम्तिह़ानात (यानी पेपर्ज़) के दिनों में मैं जब स्कूल में बच्चों को बहुत ज़ियादा पढ़ते हुए देखता तो ह़ैरान होता क्यूंकि मैं इम्तिह़ानात की तय्यारी नहीं करता था और इस के बावुजूद मैं पोज़ीशन लेता था।

बचपन में ख़ौफ़े ख़ुदा का वाक़िआ़

एक मरतबा अमीरे अहले सुन्नत के बचपन में किसी मामूली बात पर आप की बड़ी बहन ने नाराज़ हो कर कह दिया : "अल्लाह पाक तुम को मारेगा !" इस जुम्ले का सुनना था कि आप ख़ौफ़े ख़ुदा से डर गए अगर्चे उस वक़्त उ़म्र बहुत कम थी इस के बावुजूद आप अपनी बहन से बार बार कहने लगे : बोलें ! अल्लाह पाक नहीं मारेगा ।।। बोलें ! अल्लाह पाक नहीं मारेगा ।।। बोलें ! अल्लाह पाक मुझे नहीं मारेगा ।।। ! ह़त्ता कि अपनी बहन से येह कहलवा कर ही दम लिया।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक ने जिस बन्दे से दीन का काम लेना होता है बसा औक़ात बचपन ही से उस में आ़म बच्चों की ब निस्बत कुछ अलग ख़ुसूसिय्यात होती हैं, येह अल्लाह पाक की ख़ास इ़नायत है। कई बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ के बचपन के वाक़िआ़त में ख़ौफ़े ख़ुदा की मिसालें मौजूद हैं, अभी वाक़िए़ में आप ने पढ़ा कि एक जुम्ले ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की नन्ही सी उ़म्र में ख़ौफ़े ख़ुदा का येह पहलू नुमायां किया कि आप अपनी बहन से उस जुम्ले से रुजूअ़ करवा कर ही रहे। बचपन की आ़दात उ़म्र भर इन्सान के आमाल,

अख़्लाक़ और सोच पर छाई रहती हैं। यक़ीनन जो बच्चा कम सिनी में अल्लाह पाक का ख़ौफ़ दिल में बसाएगा, जवानी में भी येह ख़ौफ़ उस के साथ साथ होगा और उस की रहनुमाई करता रहेगा जिस की वज्ह से वोह हर ग़लती से बचने की कोशिश करेगा, اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ ! दुनिया ने देखा कि वोह कम सिन बच्चा अहम दीनी मज़हबी और रूहानी पेशवा की हैसिय्यत से आलम (यानी दुनिया) में ज़ाहिर हुवा और दुनिया ने उन्हें "**अमीरे अहले सुन्नत**" कह कर पुकारा। अल्लाह पाक हमें भी अपना ख़ौफ़ नसीब करे, बारगाहे इलाही में अमीरे अहले सुन्नत अ़र्ज़ करते हैं :

इलाही ! वासिता प्यारे का मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा
अ़ज़ाबे नार से मुझ को ख़ुदाया ख़ौफ़ आता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه यादगारे अस्लाफ़ हैं यानी आप को और आप के किरदार को देख कर पहले के बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की याद ताज़ा हो जाती है। अमीरे अहले सुन्नत के बचपन के ख़ौफ़े ख़ुदा का वाक़िआ पढ़ने के बाद मज़ीद पढ़िये कि सदियों पहले के अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते साबित बिन अस्लम बुनानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जो बसरा शरीफ़ के बड़े बा वक़ार और बहुत बड़े मुह़द्दिसीन (यानी उ़लमाए ह़दीस) में से थे, आप पर ख़ौफ़े इलाही का किस क़दर ग़लबा रहता था कि जब भी आप के सामने "**जहन्नम**" का तज़्किरा किया जाता तो ऐसे बे क़रार हो जाते कि तड़पने लगते और बदन पर लर्ज़ा त़ारी हो जाता। (औलियाए रिजाल अल ह़दीस, स. 82) अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

ख़ौफ़े ख़ुदा किसे कहते हैं ?

ख़ौफ़े ख़ुदा का मत़लब येह है कि अल्लाह पाक की बे नियाज़ी, उस की नाराज़ी, उस की गिरिफ़्त और उस की त़रफ़ से दी जाने वाली सज़ाओं का सोच कर

इन्सान का दिल घबराहट में मुब्तला हो जाए। (احیاء العلوم، 4/190)

ऐ काश ! अमीरे अहले सुन्नत की येह दुआ हमारे हक़ में भी क़ुबूल हो जाए।

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा मैं थर थर रहूं कांपता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

अमीरे अहले सुन्नत की बचपन में जेब ख़र्ची

अमीरे अहले सुन्नत इरशाद फ़रमाते हैं : मैं जब छोटा था तो मेरी वालिदा मुझे जेब ख़र्च (Pocket Money) के लिये "**एक पैसा**" देती थीं। उस वक़्त एक रुपिये में "**सोलह आने**" होते थे और एक आने में चार पैसे (यानी पहले एक रुपिये में चौंसठ पैसे होते थे लेकिन अब एक रुपिये में सौ पैसे होते हैं।) और अगर आप को वालिदा से पहले किसी और अ़ज़ीज़ रिश्तेदार से एक पैसा मिल जाता तो आप ख़ुशी ख़ुशी अपनी अम्मीजान से कहते : मां ! अब मुझे पैसा नहीं देना क्यूंकि मुझे मिल गया है।

इस वाक़िए को भोलापन कहिये या कमसिनी की उ़म्र से ही मालो दौलत की कसरत से दूरी की आ़दत, वरना आज कल के बच्चे वालिदैन से जेब ख़र्च बढ़ाने का तक़ाज़ा कर के घर के अख़राजात में मज़ीद इज़ाफ़े और बाज़ औक़ात वालिदैन के लिये परेशानी का बाइ़स बनते हैं। तमाम नन्हे मुन्ने बच्चों से अ़र्ज़ है कि वोह अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बचपन के वाक़िए से येह सीखें कि वालिदैन जो दें, जितना दें, हमें हंसी ख़ुशी ले लेना चाहिये और ज़ियादा जेब ख़र्च, चीज़ों या खिलौनों वग़ैरा का मुतालबा भी नहीं करना चाहिये। अच्छे बच्चे अपने अम्मी अब्बू को परेशान नहीं करते बल्कि उन की हर बात मान कर उन का दिल ख़ुश कर के उन के दिल की दुआ़एं लेते हैं। आप ने देखा होगा कई जगहों पर लिखा

होता है कि "मां की दुआ जन्नत की हवा" जब हमारे वालिदैन हम से ख़ुश हो कर हमारे लिये दुआएं करेंगे तो अल्लाह पाक की रह़मत से जन्नत की कभी न ख़त्म होने वाली नेमतें ह़ासिल होंगी। اِن شاءَ اللہ الکریم

मुतीअ़ अपने मां बाप का कर मैं उन का हर इक हुक्म लाउं बजा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 101)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

बच्चों को येह बात ज़रूर बताइये !

अमीरे अहले सुन्नत की वालिदा मर्ह़ूमा बचपन ही से आप को डराती थीं कि देखो बेटा ! अगर कोई सोने का ढेर भी दिखाए तब भी उस के पास नहीं जाना, कहीं वोह उठा कर न ले जाए।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अख़बारात में रोज़ाना ख़बरें आती हैं कि फ़ुलां गैंग बच्चों को इग़वा (Kidnap) कर के ले गया। ऐसे ख़तरनाक मुजरिम बच्चों को इग़वा करने के बहाने इन्हें खाने पीने की चीज़ें जैसे टॉफ़ी, चॉक्लेट, बिस्किट या रक़म दिखा कर क़रीब बुलाते हैं और फिर कुछ सुंघा कर, बेहोश कर के इग़वा कर लेते हैं, अल्लाह पाक इन जराइम पेशा लोगों को हिदायत दे। वालिदैन को चाहिये कि वोह बिल ख़ुसूस अपने कम उ़म्र बच्चों को अकेले कहीं न जाने दें ख़ुदा न ख़्वास्ता बच्चा खो गया तो सारी ज़िन्दगी रोते गुज़रेगी।

प्यारे बच्चो ! खाने पीने की चीज़ हो या कोई ख़ूबसूरत खिलौना या मोबाइल वग़ैरा पर कार्टून्ज़ दिखा कर कोई अजनबी शख़्स क़रीब बुलाने की कोशिश करे तो फ़ौरन अपने अम्मी अब्बू के पास चले जाएं, अगर कोई ज़बरदस्ती पकड़ने की कोशिश करे तो शोर मचा कर लोगों को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह करें ताकि इग़वा करने वाला भाग जाए। अपनी और बच्चों की ह़िफ़ाज़त के लिये अमीरे अहले सुन्नत के अ़ता कर्दा दो रूह़ानी इ़लाज पेश किये जाते हैं :

इग़वा होने से हिफ़ाज़त के 2 वज़ाइफ़

﴾1﴿ "یَاحَافِظُ یَاحَفِیْظُ" 11 बार रोज़ाना पढ़ कर बच्चों पर दम कर दिया करें اِنْ شَآءَاللہ इग़वा होने से हिफ़ाज़त रहेगी।

﴾2﴿ जब वुज़ू करें तो हर उज़्व धोते हुए "یَاقَادِرُ" कम अज़ कम एक बार पढ़ लिया करें। اِنْ شَآءَاللہ इग़वा होने से हिफ़ाज़त रहेगी।

(मदनी मुज़ाकरा, 17 दिसम्बर 2016, 18 रबीउ़ल अव्वल 1438 हिजरी)

मेरे बाल बच्चों पे सारे क़बीले पे रहमत हो तेरी सदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 106)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत के खिलौने

एक सुवाल के जवाब में अमीरे अहले सुन्नत ने अपने बचपन के खेल और खिलौनों के बारे में बताते हुए फ़रमाया : आज कल जिस तरह बाज़ वालिदैन अपने बच्चों के लिये खिलौनों के ढेर लगा देते हैं, मेरे हां ऐसी तरकीब न थी अलबत्ता उस वक़्त एक आने की रबड़ की छोटी सी गेंद मिलती थी जो जल्दी फट जाती थी, इस तरह के खिलौनों से कुछ न कुछ खेलने की तरकीब रही।

अमीरे अहले सुन्नत की साइकिल टूट गई

बचपन में अमीरे अहले सुन्नत के पास एक तीन पहयों वाली साइकिल थी, एक बार आप इसे चला रहे थे कि पीछे से एक शरारती लड़के ने धक्का दिया तो आप साइकिल समेत राह चलते एक बड़ी उ़म्र के आदमी से टकरा गए जिन की कमर झुकी हुई थी, उन्हों ने ग़ुस्से में आ कर साइकिल उठा कर ज़मीन पर दे मारी जिस से उस की सीट टूट कर अलग हो गई, अगर्चे साइकिल लगने से उन्हें तक्लीफ़ हुई होगी लेकिन उन बड़े साहिब को इस तरह नहीं करना चाहिये था क्यूंकि

नाबालिग़ के माल को किसी त़रह़ भी नुक़्सान नहीं पहुंचाया जा सकता और यहां तो मुआ़मला ही कुछ और था कि उन को क़स्दन साइकिल नहीं मारी गई थी बल्कि येह किसी की शरारत थी। अल्लाह पाक उन्हें मुआ़फ़ करे। अब 2026 में उन बुज़ुर्ग जिन को साइकिल लगी थी उन का ज़िन्दा होना तक़रीबन नामुम्किन है क्यूंकि वोह उस वक़्त 60 या 70 साल के होंगे।

अमीरे अहले सुन्नत ने जब येह वाक़िआ़ बयान किया तो फ़रमाया : मैं ने बालिग़ होने के बाद उन्हें मुआ़फ़ कर दिया था।

नाबालिग़ की अश्या का हुक्म

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यहां येह बात याद रखना बहुत ज़रूरी है कि नाबालिग़ की शै को नुक़्सान नहीं पहुंचा सकते, अगर किसी ने नाबालिग़ की चीज़ को नुक़्सान पहुंचाया तो उस का तावान अदा करना होगा क्यूंकि नाबालिग़ मुआ़फ़ भी नहीं कर सकता अगर्चे वोह ज़बान से कह भी दे मगर जिस ने नुक़्सान किया हो, उसे रक़म अदा करनी होगी या वैसी चीज़ दिलानी होगी वरना आख़िरत में ह़िसाब देना पड़ेगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

वोह शरारती बच्चा कौन था ?

जिस शरारती बच्चे के सबब अमीरे अहले सुन्नत की साइकिल टूटी, वोह आप के पड़ोस में रहने वाला, आप से उ़म्र में दो तीन साल बड़ा बच्चा था। चन्द साल क़ब्ल शायद 2015 में वोह अमीरे अहले सुन्नत की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, राक़िमुल हुरूफ़ (यानी अबू मुह़म्मद त़ाहिर अ़त्तारी عفی عنہ) भी इस मौक़अ़ पर मौजूद था। सफ़ेद दाढ़ी वाले वोह बुज़ुर्ग (अमीरे अहले सुन्नत के दोस्त) बड़े हंस मुख और ख़ुश मिज़ाज थे। अमीरे अहले सुन्नत से मुलाक़ात के दौरान बचपन की बातें हुईं तो

उन्हों ने इन्किशाफ़ किया कि आप की साइकिल को पीछे से धक्का मैं ने दिया था, जिस पर अमीरे अहले सुन्नत ने उन्हें नेकी की दावत देते हुए समझाया।

बचपन का आंखों देखा ह़ाल

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मह़ल्ले में रहने वाले एक इस्लामी भाई जो आप को बचपन से जानते हैं, उन्हों ने ह़ल्फ़न बताया कि अमीरे अहले सुन्नत बचपन से ही निहायत सादा त़बीअ़त के मालिक हैं, अगर बचपन में आप को कोई डांटता या मारता तो आप बदला लेने के बजाए ख़ामोश रहते और सब्र करते, मैं ने आप को बचपन में कभी किसी को बुरा भला कहते या झगड़ते नहीं देखा।

"अ़त्तार" के 4 ह़ुरूफ़ की निस्बत से अमीरे अहले सुन्नत के बचपन की 4 यादें

﴾1﴿ अमीरे अहले सुन्नत बचपन में अपनी वालिदा से कहते : मां ! देखें मैं कितनी बड़ी छलांग लगा लेता हूं, वालिदा को फ़ौत हुए अब कमो बेश 50 साल हो गए लेकिन बचपन के येह जुम्ले और इस पर वालिदा की ह़ौसला अफ़ज़ाई का अन्दाज़ अब तक याद है।

﴾2﴿ बचपन में हम येह जुम्ला सुनते थे कि "**लड़ाई लड़ाई मुआ़फ़ करो अपना दिल साफ़ करो**" और अफ़सोस ! अब ऐसा ज़माना आ गया है कि येह सुनने में आता है : "**हम शरीफ़ के साथ शरीफ़ और बद मआ़श के साथ बद मआ़श हैं**" مَعَاذَاللہ। (मदनी मुज़ाकरा : 15 शाबान शरीफ़ 1440 हिजरी, 20 अप्रैल 2019)

﴾3﴿ हमारे बचपन के दौर में अगर किसी को प्यास लगी होती, वोह किसी से पानी पिलाने का कहता और सामने वाला पानी न पिलाता तो लोग कहते : "**यज़ीद**" है कि प्यासे को पानी नहीं पिलाता। यक़ीनन ऐसा नहीं कहना चाहिये कि येह गाली ही है जो दिल आज़ारी का सबब है। (मदनी मुज़ाकरा : 20 जुमादल ऊला 1440 हिजरी, 26

जनवरी 2019) अलबत्ता अपने मुसलमान भाई को पानी पिलाने के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीसे पाक में है : नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो मुसलमान किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिलाए अल्लाह पाक उसे रह़ीक़े मख़्तूम (यानी जन्नत की साफ़ सुथरी ख़ालिस शराब जिस पर मोहर लगी हुई होगी) पिलाएगा।

(ترمذی، 4/204، حدیث:2457)

﴿4﴾ अमीरे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं : मैं ने बचपन में चन्द ऐसे पर्चे देखे, जिन के बारे में कहा जाता था कि उन की 30 फ़ोटो कॉपियां करवा कर बांटो। फ़ुलां फ़ुलां ने बांटा तो उस को इतना इतना फ़ायदा हो गया और फ़ुलां ने इस को ग़लत़ कहा तो उस का बच्चा मर गया। "**फ़तावा रज़विय्या**" में इस से मिलते जुलते पर्चे का ज़िक्र है और आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इस का रद फ़रमाया है कि ऐसा कुछ नहीं होता। (फ़तावा रज़विय्या, 23/404। मदनी मुज़ाकरा, 28 रबीउ़ल अव्वल 1442 हिजरी, 14 नवम्बर 2020) इस पर्चे की ताज़ा सूरत अब मुआ़शरे में कुछ इस त़रह़ भी चल रही है कि बाज़ लोग सोशल मीडिया पर किसी पोस्ट को वायरल करने पर फ़वाइद बताते और शेयर न करने पर नुक़्सानात की धम्कियां दे रहे होते हैं, ऐसों को सच्ची तौबा कर के इस काम से बाज़ आना चाहिये कि इस त़रह़ तश्वीश और ग़लत़ फ़हमी फैलती है। बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक में है, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "بَشِّرُوْا وَلَا تُنَفِّرُوْا" तर्जमा : ख़ुशख़बरी सुनाओ नफ़रत न दिलाओ।

(بخاری، 1/42، حدیث:69)

अल्लाह पाक हमें ह़क़ीक़ी माना में इस ह़दीसे पाक पर अ़मल करने वाला बनाए।

छोड़ दे सारे ग़लत़ रस्मो रिवाज सुन्नतों पर चलने का कर अ़हद आज

(वसाइले बख़्शिश, स. 715)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अहले बैते अत्हार رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم की मह्ब्बत मेरी घुट्टी में है (वाक़िआ)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के लड़कपन में कराची में एक बार सख़्त वबा फैली, इस मौक़े पर आप अपने हम उम्र बच्चों के साथ (जिन में शहर कराची के मश्हूर नात ख़्वां "अलहाज सिद्दीक़ इस्माईल साहिब" भी होते थे) गलियों वग़ैरा में अहले बैते अत्हार رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم की शानो अज़मत के वसीले से एक अरबी शेर पढ़ते जिसे दीगर बच्चे दोहराते।।।

لِیۡ خَمۡسَۃٌ اُطۡفِیۡ بِہَا حَرَّ الۡوَبَاءِ الۡحَاطِمَۃ اَلۡمُصۡطَفٰی وَالۡمُرۡتَضٰی وَابۡنَاہُمَا وَالۡفَاطِمَۃ

यानी मेरे लिये पांच (हस्तियां) हैं उन के ज़रीए तोड़ कर रख देने वाली वबा की गर्मी बुझाता हूं और वोह पांच (हस्तियां) येह हैं : ﴿1﴾ अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी मुहम्मदे अरबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ﴿2﴾ मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ﴿3,4﴾ इन के दोनों शहज़ादे इमामे हसन व इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ﴿5﴾ और हज़रते बीबी ख़ातूने जन्नत सय्यिदा तय्यिबा ज़ाहिदा आबिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا।

बादामी मस्जिद से पूरे अलाक़े में चौराहों, गलियों वग़ैरा में बीमारी से नजात हासिल करने की निय्यत से अज़ानें देते और येह दुआइय्या शेर पढ़ते हुए चक्कर लगाते थे। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ इरशाद फ़रमाते हैं : इस में बच्चों को इतना शौक़ होता कि बहुत सारे बच्चे जमा हो जाते और गलियों में येह पढ़ते हुए जाते थे। अल्लाह पाक और उस के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप की आले पाक का ज़िक्रे ख़ैर होता था, जिस की बरकत से अच्छा माहौल बन जाता था।

सदक़ा बाबा जान का फ़रमा दुआ मुझ को मिले हर बरस हज व ज़ियारत की सआदत फ़ातिमा
ऐ शहीदे करबला की प्यारी प्यारी वालिदा ! कर दुआ पाउं मदीने में शहादत फ़ातिमा

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

नवासए रसूल, इमामे आ़ली मक़ाम इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मह़ब्बत

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! अहले बैते अत्हार की मह़ब्बत हमारी घुट्टी में है। नवासए रसूल, शहज़ादए बतूल, जिगर गोशए शेरे ख़ुदा, सय्यिदुश्शोहदा, इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मुझे उस वक़्त से मह़ब्बत व उल्फ़त है जब मुझे अपनी नन्ही सी उ़म्र में आप का नाम मुबारक लेना भी न आता था लेकिन मुझे येह मालूमात थीं कि आप बड़ी शानो अ़ज़मत वाले हैं। (मदनी मुज़ाकरा : 25 रमज़ान 1429 हिजरी)

सादाते किराम के अदबो एह़तिराम की मिसाल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत सादाते किराम का बड़ा अदबो एह़तिराम करते हैं, आप उन्हें सरकार, शहज़ादे, शहज़ादए आ़ली वक़ार और बापूए आबरूदार जैसे मुअ़ज़्ज़ज़ अल्क़ाबात से पुकारते हैं। आप सादाते किराम की मौजूदगी में ऊंची जगह या मस्नद पर बैठना नागवार मह़सूस करते हैं बल्कि कई बार उन्हें अपने साथ कुर्सी पर बिठाते हैं। सादाते किराम की त़रफ़ पांव फैलाने को ख़िलाफ़े अदब समझते हैं। जब सादाते किराम से मिलते हैं तो उन के हाथ चूम लेते हैं, बारहा आप ने नन्हे मुन्ने सय्यिद शहज़ादों (यानी बच्चों) के पांव के तल्वे अपने सर पर रख लिये। आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की अदा को अदा करते हुए किसी चीज़ की तक़्सीम या ईदी के मौक़े पर सादाते किराम को आ़म लोगों की निस्बत "डबल" (यानी दुगना) अ़ता फ़रमाते हैं, कई बार सादाते किराम को कोई तोह़फ़ा पेश करते वक़्त इस क़दर नियाज़ मन्दाना अन्दाज़ इख़्तियार करते हैं कि जैसे आप दे नहीं बल्कि उन से ले रहे हों। एक मरतबा आप की ख़िदमत में 25 लाख रुपिये पेश किये गए तो आप ने वोह तमाम रक़म चन्द सादाते किराम को नज़रानतन पेश कर दी। आप अपने मदनी मुज़ाकरों और मदनी मश्वरों वग़ैरा में

बारहा मालदारों, डॉक्टरों और दुकानदारों को तरग़ीब दिलाते हैं कि वोह आले रसूल (यानी सादाते किराम) का इ़लाज मुफ़्त या कम क़ीमत पर करें और उन्हें दीगर अश्या मुफ़्त या कम क़ीमत पर दे दें। अमीरे अहले सुन्नत हर साल सादाते किराम को क़ुरबानी के जानवर तोह़फ़तन पेश करते हैं। आप ने दावते इस्लामी के कई मदनी मराकिज़ "**फ़ैज़ाने मदीना**" वग़ैरा का संगे बुन्याद अपने हाथों से रखने की बजाए चन्द कम उ़म्र सादाते किराम शहज़ादों से रखवाया। उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के पेशे नज़र रोज़ाना दुआ वग़ैरा के पैग़ामात की रिकॉर्डिंग होती है, जिस का आग़ाज़ किसी सय्यिद साह़िब से करने की कोशिश फ़रमाते हैं। आप ने अपनी वसिय्यत में लिखा है कि मुझे क़ब्र में उतारने के लिये सादाते किराम को फ़ौक़िय्यत दी जाए। एक मरतबा आप ने फ़रमाया : अगर आख़िरत में बेख़ौफ़ होना चाहते हैं तो सय्यिदों से डरा करें (यानी उन की बे अदबी से बचें)। मज़ीद तफ़्सीलात के लिये मक्तबतुल मदीना का रिसाला "अमीरे अहले सुन्नत और ताज़ीमे सादात" पढ़िये।

आले अत़्हार के मैं गीत हमेशा गाउं ख़ुश रहे मुझ से तेरी आल मदीने वाले

येह वक़्त भी गुज़र जाएगा

दावते इस्लामी के सौ फ़ीसद **दीनी और** इस्लामी चैनल के मश्हूर प्रोग्राम "मदनी मुज़ाकरे" में दुनिया भर से आ़शिक़ाने रसूल सोशल मीडिया प्लेट फ़ॉर्मज़ पर वीडियोज़, ऑडियोज़ के ज़रीए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर सुवालात करते हैं और आप उन के ह़िक्मत भरे जवाबात अ़ता फ़रमाते हैं, चन्द बार मदनी मुज़ाकरों में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने बचपन और लड़कपन के मुश्किल ह़ालात का बयान किया है जिन्हें सुन कर येह एह़सास पैदा होता है कि आप ने किस त़रह़ कसमपुर्सी के ह़ालात में सब्रो तह़म्मुल का मुज़ाहरा किया। आप फ़रमाते हैं : "मुश्किल वक़्त निकल ही जाता है,

मैं ने बचपन में बहुत आज़माइशें उठाईं, हमारे घर में पंखा नहीं था और दीवारें कच्ची होने के बाइस खटमलों के काटने की आज़माइश अलग थी। हम बहन भाई बारी बारी एक दूसरे को पंखा झल्ते ताकि गर्मी की शिद्दत से बचत हो। घर में गैस की लाइन नहीं थी, मैं बाहर से काग़ज़, गत्ते वग़ैरा चूल्हा जलाने के लिये लाता था और पानी की लाइन भी नहीं थी, मैं पानी भर कर लाता था, हाथ से चलाने वाले नलके (Hand pump) से भी पानी भरते थे। कभी कभी मैं एक रुपिये सेर भैंस का ख़ालिस दूध घर लाता था जो वाक़ेई उस वक़्त ख़ालिस होता था और फिर उस पर दूध की झाग भी डालते थे जिस पर मुनासिब मलाई भी जमती थी, हम ग़रीब लोग थे, रोज़ाना दूध नहीं पी सकते थे, मैं मां से दूध का कहता तो आप बोलतीं : हां हां आप के लिये भैंस बांध लें ? मत़लब येह कि हम रोज़ाना दूध कैसे पियें ? मेरी वालिदा रीठा नामी बूटी (जो दवाओं में भी इस्तिमाल होती है) इसे गर्म पानी में भिगो कर रखतीं तो उस से ख़ुश्बूदार झाग बनता था। इस में नारियल का छिल्का डाल कर बच्चों को नहलाया जाता था। मैं गन्दुम का डब्बा उठा कर चक्की से पिसवा कर आटा लाता, यूंही मिर्चें पिसवाता, घर का सौदा सलफ़ (यानी सामान) लाता। खजूर का गुड़ खाते थे। बचपन में घर में मुर्ग़ी के सर, गर्दन और पंजे (छिलवा कर) लाता, जिस दिन घर में येह पकते उस दिन हमारी ईद होती थी। ग़ुर्बत का येह आ़लम था कि घर के पांच अफ़राद के लिये एक अन्डा तला जाता मगर अल्लाह पाक का लाख लाख शुक्र है कि हमें कभी फ़ाक़ा नहीं पहुंचा और न ही कभी सुवाल करने की नौबत आई, मैं ने बहुत छोटी उ़म्र में कस्बे ह़लाल के लिये कोशिशें शुरूअ़ कर दी थीं। दूसरे बच्चों की त़रह़ मेरा बचपन खेल कूद में नहीं गुज़रा। मेरी वालिदए मर्हूमा एक बार किसी को येह बताते हुए रो पड़ी थीं कि "मेरा बाबू बचपन में खेला नहीं, उस ने खेलने के दिन भी काम काज में गुज़ार दिये हैं।"

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत अपने वालिदैन के सब से छोटे बेटे हैं और आ़म त़ौर पर घर में प्यार से बच्चे को किसी नाम से पुकार लिया जाता है अगर उस नाम में शरअ़न कोई ह़रज न हो तो उस नाम से पुकारना जाइज़ है, जैसा कि अमीरे अहले सुन्नत को आप की वालिदा प्यार से "बाबू" कह कर पुकारती थीं। आज छोटे छोटे बच्चों की सालगिरह में बड़े प्रोग्राम्ज़ मुन्अ़क़िद किये जाते हैं, हॉल बुक करवा कर रिश्तेदारों और दोस्तों वग़ैरा को बुला कर बच्चे की सालगिरह मनाई जाती है लेकिन आप के बचपन में कभी घर में सालगिरह मनाई गई हो ऐसा नहीं हुवा। अल्लाह पाक ने आप को वोह दीनी मक़ामो मरतबा अ़त़ा फ़रमाया कि लाखों आ़शिक़ाने रसूल आप से मह़ब्बत करते और आप के मुरीद हैं। गुज़श्ता चन्द सालों से 26 रमज़ानुल करीम को आप की विलादत की ख़ुशी मनाई जाती है, येह तक़रीब किसी हॉल या बैंक्वेट में नहीं बल्कि अल्लाह पाक के घर दावते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना की मस्जिद में होती है और इस में न केक कटते हैं न कोई ग़ैर शरई मुआ़मला होता है बल्कि तोह़फ़े में कई इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें (आप के मदनी बेटे और बेटियां) आप को ख़त्मे क़ुरआन, दुरूदो सलाम और दीगर इ़बादात का सवाब ईसाल करते हैं। इस ख़ुशी के मौक़े पर मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी مُدَّ ظِلُّہُ الْعَالِی आ़शिक़ाने अमीरे अहले सुन्नत के दिलों में मह़ब्बते अमीरे अहले सुन्नत बढ़ाने के लिये अपने अ़ज़ीम मोह़सिन (यानी एह़सान करने वाले, अमीरे अहले सुन्नत) का शुक्रिया अदा करते हुए सुन्नतों भरा बयान कर के नेकी की दावत आ़म करते हैं।

वालिदा की इत़ाअ़त का जज़्बा

गउ गली वाले घर के पीछे एक बड़ा सा रोड है जब कि उस की दूसरी त़रफ़ ककरी ग्राउंड है, इस रोड पर हेवी ट्रैफ़िक वग़ैरा के सबब चन्द बार ह़ादिसात हुए हैं, इस ख़ौफ़ की वज्ह से मादरे शफ़्क़त (यानी मां मह़ब्बत के सबब) अमीरे अहले

सुन्नत को उस ग्राउंड में खेलने के लिये जाने से मना फ़रमाती थीं और आप अपनी वालिदए मर्हूमा की बात मानते और वहां न जाते थे आप के वोही पड़ोसी जिन का पीछे ज़िक्र हुवा उन्हों ने मुझे (यानी मुहम्मद ताहिर अ़त्तारी عُفِیَ عَنہ को) बताया कि मैं उस वक़्त अमीरे अहले सुन्नत को कहता कि चलो ! ग्राउंड में खेलने चलते हैं मगर आप फ़रमाते : "मां ने मना किया है" मैं कहता : अभी मां नहीं देख रही ? अगर पूछे तो झूट बोल देना तो आप जवाब देते : मैं क्यूं झूट बोलूं ? अल्लाह देख रहा है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! "झूट बोलने का मश्वरा देना भी गुनाह है", चूंकि उस वक़्त अमीरे अहले सुन्नत और आप के पड़ोसी दोनों ना बालिग़ थे इस लिये शरअ़न गुनाह नहीं अलबत्ता अपने बच्चों को महल्ले के ऐसे लड़कों से जो झूट बोलते बल्कि झूट बोलने और मां बाप की ना फ़रमानी करने का मश्वरा देते हैं इन से बिल्कुल दूर रखना चाहिये। इस तरह के बच्चों की सोहबत में उठने बैठने और खेलने के लिये जाने वाला बच्चा भी उसी रंग में रंग सकता है, येह अल्लाह पाक की ख़ास रहमत थी कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को बचपन ही से सच और ख़ौफ़े ख़ुदा की नेमत हासिल थी। तमाम वालिदैन से इल्तिजा है अगर आप चाहते हैं कि आप का बच्चा गाली गलोच, ज़बान दराज़ी और दीगर तरह तरह की बुराइयों से महफ़ूज़ रहे तो इस के लिये सब से पहले अपने बच्चों को गली महल्ले के बच्चों के साथ खेलने से रोकिये अगर्चे हर बच्चा बुरा नहीं लेकिन न जाने कौन ऐसा हो और आप के बच्चे के साथ दोस्ती पक्की हो जाए और फिर जब आप अपने बच्चे में बुरी आदात व हरकात देखें तो पानी सर से गुज़र जाए। अपने बच्चों को किड्ज़ दावते इस्लामी का चैनल दिखाइये ! ग़ुलाम रसूल, कनीज़ फ़ातिमा, हम्ज़ा, सअ़द और सअ़दिया वग़ैरा एनीमेटेड (Animated) कार्टून समेत बच्चों के दीगर प्रोग्राम्ज़ दिखाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه अच्छी तरबियत का सामान होगा और आप के बच्चे सुन्नतें और दुआएं याद करेंगे और प्यारे बच्चो ! आप ने देखा कि हमारे

प्यारे प्यारे अमीरे अहले सुन्नत बचपन में अपनी अम्मीजान की कैसी फ़रमां बरदारी करते थे। आप भी इसी त़रह़ अपने अम्मी अब्बू की बात मानें और अपनी इस्लामी, दीनी मसरूफ़िय्यत रखें, अगर आप प्यारी सी गुड़िया हैं तो अपनी अम्मी के साथ इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में तशरीफ़ ले जाएं और अगर आप प्यारे से शहज़ादे हैं तो अपने अब्बू के साथ अपने शहर में होने वाले जुमेरात इज्तिमाअ़ में तशरीफ़ ले जाएं। अगर वालिदैन किसी वज्ह से वहां न ले जाएं तो भी उन से नाराज़ न हों और बार बार जाने की ज़िद भी न करें, जिस मुआ़मले में आप के लिये बेहतरी होगी आप के वालिदैन वोही करेंगे। اِنْ شَآءَاللّٰه

प्यारे बच्चो ! अमीरे अहले सुन्नत की चन्द नसीह़तें पढ़िये और इन पर अ़मल कीजिये।

नन्हे मुन्ने प्यारे बच्चो ! शाद रहो तुम सारे बच्चो !
अम्मी अब्बू की आंखों के जग मग जग मग तारे बच्चो !
ख़ुश अम्मी अब्बू को रखो होंगे वारे नियारे बच्चो !
सच्चे बच्चे अच्छे बच्चे झूट न बोलो प्यारे बच्चो !
पांच नमाज़ें रोज़ पढ़ो, रब होगा राज़ी प्यारे बच्चो !
ग़ौसो रज़ा के हम हैं ख़ादिम वोह हैं हमारे प्यारे बच्चो !
अम्मी जो भी दे वोह खा लो ज़िद न करो ऐ प्यारे बच्चो !
मौला ह़ाजी तुम को बनाए त़ैबा देखो प्यारे बच्चो !
ज़िक्र करो और नात पढ़ो तुम ख़ूब ऐ मेरे प्यारे बच्चो !

(वसाइले फ़िरदौस, स. 47,48)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मस्जिद से मह़ब्बत

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मैं ने शुरूअ़ ही

से मस्जिद का रास्ता देखा, मुझे मस्जिद में आने जाने का शौक़ था, मैं जिस वक़्त से मस्जिद में ह़ाज़िर होता जब छोटे बच्चे नमाज़ में एक दूसरे को धक्के देते और बच्चों की पूरी सफ़ गिरा देते। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! मुझे अच्छी त़रह़ याद है कि मैं ने कभी इस त़रह़ नहीं किया अलबत्ता मैं सफ़ में नमाज़ पढ़ते हुए गिरा ज़रूर हूं लेकिन मैं ने किसी को धक्का दिया न कभी गिराया। बच्चों की टीमें बना कर नमाज़ के लिये जगाता और मस्जिद में नमाज़ के लिये जाता था।

मुझे मस्जिदों से दे उल्फ़त इलाही ! करूं ख़ूब तेरी इबादत इलाही !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

दौड़ मस्जिद तक

अफ़सोस ! आज कल बाज़ लोग बात बात पर उ़लमाए किराम के बारे में तौहीन आमेज़ जुम्ले बोल दिया करते हैं बल्कि बाज़ दीन से बेज़ार लोग अ़वाम में "मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक" का नारा लगा कर उ़लमाए किराम या मज़हबी अफ़राद की तौहीन करते हैं अगर्चे इस मुहावरे से "मह़दूद सोच" के माना लिये जाते हैं लेकिन येह नारा दीने इस्लाम और उ़लमाए किराम से दूर करने की सोच की भयानक शक्ल है, ह़दीसे पाक में उ़लमाए किराम को "अम्बियाए किराम का वारिस" फ़रमाया गया है। (ابن ماجہ، 1/146، حدیث:223) जब ऐसे अल्फ़ाज़ बत़ौरे त़न्ज़ इस्तिमाल होते हैं तो अ़वाम के दिल में अहले इ़ल्म का एह़तिराम और मक़ामो मरतबा कम हो सकता है। क़ुरआने करीम में किसी मुसलमान को ह़क़ीर समझने या इस का मज़ाक़ उड़ाने से मना फ़रमाया गया है और शरीअ़त में येह सख़्त ना पसन्दीदा काम है। क़ुरआने पाक में "सूरतुल हुजुरात" में इस का वाज़ेह़ बयान है। जब आ़म मुसलमान के बारे में येह हुक्म है तो उ़लमाए किराम और दीगर मज़हबी अफ़राद से दूर करने का वबाल कितना ज़ियादा होगा और अगर दूर करने का मक़्सद येह हो कि कहीं लोग इन की सोह़बत की बरकत से दीन की बातें सीख कर अपनी दुनिया व आख़िरत बेहतर न बना लें तो यक़ीनन ऐसा शख़्स मुसलमानों का

दोस्त नहीं हो सकता और येह शैतानी सोच है। हमें इस तरह कहने वालों के साए से भी बचना चाहिये, अगर शरीअ़त के एतिबार से इस मुहावरे का बग़ौर जाइज़ा लिया जाए तो ह़दीसे पाक में ज़मीन में सब से बेहतरीन जगह अल्लाह पाक के घर (यानी मसाजिद) को इरशाद फ़रमाया गया है और अल्लाह पाक के हां सब से पसन्दीदा घर मसाजिद हैं, येह कितनी प्यारी बात है कि कोई शख़्स गुनाहों के अड्डों, शराब ख़ानों, सीनेमा घरों और क्लब्ज़ वग़ैरा की तरफ़ जाने की बजाए काइनात के अफ़्ज़ल और बा बरकत मक़ाम मस्जिद में जाता है बल्कि ह़दीसे पाक में ऐसे शख़्स के बारे में बड़ी ख़ुशख़बरी है जैसा कि सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम किसी शख़्स को मस्जिद की ख़बरगीरी (यानी देख भाल) करते देखो (एक रिवायत में है : मस्जिदों का आ़दी देखो) तो उस के ईमान की गवाही दे दो, बेशक अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿اِنَّمَا یَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ﴾ (پ10، التوبہ:18) तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : अल्लाह की मस्जिदों को वोही आबाद करते हैं जो अल्लाह और क़ियामत के दिन पर ईमान लाते हैं।

(ترمذی، 4/281، حدیث:2626۔ ابن ماجہ، 1/439، حدیث:802)

सफ़रे मेराज की सुहानी रात प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र एक ऐसे शख़्स के पास से हुवा जो अ़र्श के नूर में छुपा हुवा था। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बताया गया : "येह वोह शख़्स है कि दुनिया में उस की ज़बान ज़िक्रे इलाही से तर रहती थी, उस का दिल मस्जिदों में लगा रहता था और येह कभी अपने वालिदैन को बुरा कहे जाने या उन की बेइ़ज़्ज़ती किये जाने का सबब नहीं बना।" (موسوعۃ امام ابن ابی دنیا، 2/414، حدیث:95)

अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात !

मस्जिद में बैठना भी इ़बादत है भाइयो ! कतराना मस्जिदों से हलाकत है भाइयो !

आ़लिमे दीन की तौहीन

अगर مَعَاذَاللہ ! इस नारे से किसी आ़लिमे दीन की तौहीन करना मक़्सूद है तो बन्दा अपने ईमान की ख़ैर मनाए, मेरे आक़ा आला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ﴿1﴾ अगर आ़लिमे दीन को इस लिये बुरा कहता है कि वोह "आ़लिम" है जब तो साफ़ काफ़िर है और ﴿2﴾ अगर ब वज्हे इ़ल्म उस की ताज़ीम फ़र्ज़ जानता है मगर अपनी किसी दुन्यवी दुश्मनी के बाइ़स बुरा कहता है, गाली देता है और तह़क़ीर करता है तो सख़्त फ़ासिक़ फ़ाजिर है और ﴿3﴾ अगर बिला वज्ह बुग़्ज़ रखता है तो दिल का मरीज़ और नापाक बातिन वाला है और इस ख़्वाह मख़्वाह बुग़्ज़ रखने वाले के कुफ़्र का अन्देशा है। (फ़तावा रज़विय्या, 21/129 मुलख़्ख़सन मअ़त्तस्हील)

करूं आ़लिमों की कभी भी न तौहीन बना दे मुझे बा अदब या इलाही

(वसाइले बख़्शिश. 112)

क़ुरआने करीम का अदब और नमाज़े तरावीह़

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : हम क़ुरआने करीम में ख़ूबसूरती के लिये मोर के छोटे छोटे पर (जिन में ख़ून न हो) रखा करते थे जैसा कि अब भी रखने का रिवाज है। रमज़ानुल करीम में तरावीह़ के बाद बुलन्द आवाज़ से एक शख़्स कहता "اَلصَّلٰوۃُ بَرِ مُحَمَّد" यानी मुहम्मद صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद, जिस पर सब लोग दुरूदे पाक पढ़ते। (मदनी मुज़ाकरा, 12 रमज़ानुल मुबारक, 1446 हिजरी, 13 मार्च 2025)

दुरूदे पाक पढ़ने पढ़ाने के निराले अन्दाज़

अल्लाह पाक ने अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने के बारे में क़ुरआने करीम पारह 22, सूरए अह़ज़ाब, आयत नम्बर 56 में इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓىِٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ﴿۵۶﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं। ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।

इस मुबारक इबादत की बारगाहे इलाही में कैसी मक़्बूलिय्यत है कि दुनिया में बसने वाले मुख़्तलिफ़ ज़बानों के लोग अपने अपने अन्दाज़ में न सिर्फ़ येह इबादत बजा लाते हैं बल्कि इस के पढ़ने पढ़ाने के नए नए तरीक़े राइज करते हैं जैसा कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दावते इस्लामी के दीनी माहौल में दर्सो बयान वग़ैरा में "صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب" पढ़ने का ज़ेहन दिया है इस का मतलब भी येही है कि हबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़िये।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बचपन के वाक़िए में तरावीह की दो रकअत पूरी होने पर जो लफ़्ज़ बुलन्द आवाज़ से कहे जाते थे "اَلصَّلٰوۃُ بَرْ مُحَمَّد" येह नेकी की दावत पर मुश्तमिल फ़ारसी ज़बान का जुम्ला है, गोया नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने पढ़ाने का ख़ूबसूरत अन्दाज़ है जिस का मतलब है : मुहम्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़िये, जिस के जवाब में आशिक़ाने रसूल अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते। अब भी पंजाब वग़ैरा के कई अलाक़ों में येह अल्फ़ाज़ राइज हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मदीनए पाक में बाज़ मक़ामात पर "صَلِّ عَلَى النَّبِي" यानी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़िये" लिखा हुवा देखा गया है। ऐसे ही कहीं : "لَا تَنْسَ الصَّلَاةَ عَلَى النَّبِيّ" यानी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना न भूलिये ! भी लिखा होता है। आशिक़ों के अपने अन्दाज़ हैं, दुरूदो सलाम आशिक़ाने रसूल की रूहानी ग़िज़ा है, ख़ुश नसीब इसे चलते फिरते उठते बैठते पढ़ते और इस की बरकतें हासिल करते हैं। अल्लाह पाक हमें भी सुब्हो शाम दुरूदो सलाम पढ़ते रहने की सआदत नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلّى اللهُ عليه واٰله وسلّم

बेकार गुफ़्तगू से मेरी जान छूट जाए हर वक़्त काश ! लब पे दुरूदो सलाम हो
यूं मुझ को मौत आए तुम्हारे दियार में चौखट पे सर हो लब पे दुरूदो सलाम हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत की ज़िन्दगी की सब से पहली नात

एक बार 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को घर के क़रीब बादामी मस्जिद (बम्बई बाज़ार कराची) में नात ख़्वानी हो रही थी, अमीरे अहले सुन्नत के दिल में भी नात शरीफ़ पढ़ने का शौक़ उभरा, उस वक़्त आप की उ़म्र तक़रीबन दस साल होगी, आप नात पढ़ने वालों की लाइन में लग गए, जैसे ही नात ख़्वां नात पढ़ गए आप ने आगे बढ़ कर माइक हाथ में लिया और खड़े हो कर गुजराती में नातों की एक किताब से इमामे अहले सुन्नत, इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत, आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की लिखी हुई नात

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

पढ़ने लगे, जैसे ही नात का दूसरा शेर :

बरसता नहीं देख कर अब्रे रह़मत बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले

पढ़ा, बड़ी उ़म्र के एक शख़्स ने दाद देते हुए प्यार मह़ब्बत से माइक ले कर दूसरे नात ख़्वां की त़रफ़ बढ़ा दिया।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का इतनी कम उ़म्री से दीन की त़रफ़ रुजह़ान था जिस पर यक़ीनन घर के माह़ौल का भी गहरा असर था, यूं अल्लाह पाक की रह़मत और उस के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़रे इ़नायत से ख़ूब ह़िस्सा मिला। आप ने अपनी ज़िन्दगी में माइक पर सब से पहले नात का जो शेर पढ़ा उस का दूसरा मिस्रा : "मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले" था, लगता है बारगाहे रिसालत में येह फ़रियाद ऐसी मक़्बूल हुई कि आप के मुबारक दिल को वोह चमक और नूरानियत अ़त़ा हुई जिस ने लाखों ज़ंग आलूद दिलों के मैल को दूर कर के मदनी चमक से चमका दिया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

बचपन में चन्दे की एह़तियात़ का दर्दनाक वाक़िआ

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक के करम से अमीरे अहले सुन्नत में बचपन ही से क़ाइदाना सलाहिय्यतें (Leadership Skills) थीं, चुनान्चे आप ने लड़कपन में अपने हम उ़म्र बच्चों के साथ मिल कर नियाज़ के लिये चन्दा किया, एक लड़का जो बड़ा बद तमीज़ था वोह आप के पास आया और उस चन्दे की रक़म को किसी ख़िलाफ़े शरअ़ काम में ख़र्च करने का कहने लगा, अमीरे अहले सुन्नत को उस वक़्त भी इ़ल्म था कि येह जिस काम का कह रहा है वोह काम करना जाइज़ नहीं है लिहाज़ा आप ने चन्दे को इस त़रह़ ख़र्च करने से मना किया जिस पर उस बेबाक ने मुंह पर मुक्का मारा, आप के दांत टूट गए और मुंह से ख़ून निकलना शुरूअ़ हो गया लेकिन आप ने कुछ भी जवाबी कारवाई न की और रोते हुए अपनी वालिदा के पास घर आ गए। मां ने अपने जिगर के टुकड़े को लहू लुहान देखा तो मारने वाले बच्चे की वालिदा के पास शिकायत करने गईं मगर कोई दादरसी या ग़मख़्वारी न हुई। बच्चे को डांट डपट करने या समझाने की बजाए शायद घर से ऐसी शह मिली हुई थी कि उस ने बड़े भाई के सामने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की त़रफ़ इशारा कर के कहा : भाई साहि़ब ! मैं ने उन के दांत तोड़े हैं। اَلْعِیَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی। (तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 3)

कुछ अ़र्सा पहले मदनी मुज़ाकरे में येह वाक़िआ बयान करने के बाद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने फ़रमाया कि “मैं ने उस लड़के के बारे में मालूमात कीं तो पता चला दो या तीन साल पहले उस का इन्तिक़ाल हो गया है।” मेरा (यानी राक़िमुल हुरूफ़ का) हुस्ने ज़न है कि अमीरे अहले सुन्नत ने अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये उस लड़के को भी मुआ़फ़ कर दिया होगा।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपनी औलाद की सुन्नत के मुताबिक़ तालीमो तरबियत कीजिये ! जो बच्चा आज घर के बाहर किसी पर ज़ुल्मो सितम या बद तमीज़ी का मुज़ाहरा कर रहा है अगर आज आप ने उसे हिक्मते अ़मली और प्यार व मह़ब्बत के साथ न समझाया तो हो सकता है कल वोह घर में भी येह काम करे और फिर आप सर पकड़ कर बैठ जाएं। बच्चे को बचपन ही से दूसरों की इ़ज़्ज़त करना और आपस में प्यार मह़ब्बत से रहना सिखाइये। बचपन में जो अच्छी बुरी आ़दतें बच्चों में पुख़्ता हो जाती हैं वोह उ़म्र भर नहीं छूटतीं, इस लिये वालिदैन पर लाज़िम है कि वोह बच्चों को बचपन ही से अच्छी आ़दतें सिखाएं और बुरी आ़दतों से बचाएं। जब बच्चा कोई अच्छा काम करे तो उस की ह़ौसला अफ़ज़ाई करें, अगर कोई बुरा काम करे तो उस की ह़ौसला शिक्नी करें और मुनासिब अन्दाज़ में डांट डपट करें ताकि वोह आइन्दा इस काम से बाज़ रहे मसलन बच्चे ने किसी को मारा, गाली दी या स्कूल में किसी बच्चे की कोई चीज़ चुरा ली तो वालिदैन को चाहिये कि वोह सख़्ती से उस का नोट्स लें ताकि बच्चा आइन्दा कभी ऐसी ह़रकत न कर सके। अगर अभी बच्चे पर सख़्ती न की तो हो सकता है रफ़्ता रफ़्ता येह मज़ीद चोरियां करता चला जाए और ख़ुदा न ख़्वास्ता मुआ़शरे का बदनाम डाकू बन कर उभरे।

पेन्सिल की चोरी से डकैतियों तक का सफ़र

कहते हैं : एक ख़तरनाक डाकू गिरिफ़्तार किया गया तो उस पर डकैतियों और क़त्लो ग़ारत गरियों की मुख़्तलिफ़ वारदातें साबित हुईं और उसे फांसी की सज़ा सुनाई गई। फांसी के वक़्त उस से उस की आख़िरी ख़्वाहिश पूछी गई तो उस ने अपनी मां से मुलाक़ात की ख़्वाहिश ज़ाहिर की, उस की मां को बुलाया गया, अपनी मां को देखते ही उस ने मां पर ह़म्ला किया और मारना शुरूअ़ कर दिया,

अ़मले ने मां को ज़ालिम बेटे से छुड़ा कर मरने से पहले इस ह़रकत का सबब पूछा तो वोह बोला : मुझे फांसी के फन्दे तक मां ने ही पहुंचाया है, मैं ने बचपन में स्कूल के त़ालिबे इ़ल्म की पेन्सिल चुरा ली और घर ला कर मां को दिखाई थी तो मेरी मां ने मुझे इस ग़लत़ काम से नफ़रत न दिलाई बल्कि मुस्कुरा कर चुप हो गई, मैं समझा कि मैं ने कोई अच्छा काम किया है, मेरा ह़ौसला बढ़ा और मैं चोरियां करने लगा, दिल खुल गया तो मैं ने डकैतियां शुरूअ़ कर दीं, इसी लूट मार के दौरान मुझ से बाज़ क़त्ल हुए और मैं "**ख़त़रनाक डाकू**" बन गया आख़िर पोलीस के हाथों गिरिफ़्तार हो कर आज अपनी मां की ग़लत़ तरबियत की बदौलत चन्द ही लम्ह़ों के बाद गले में फांसी का फन्दा पहनने वाला हूं।

चन्दे का मस्अला

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! चन्दा लेने वाले पर फ़र्ज़ है कि इस के ज़रूरी मसाइल सीखे। चन्दे का उसूल येह है कि जिस मद्द (यानी उ़न्वान) में वुसूल किया उस के इ़लावा किसी और मद्द में इस्तिमाल करना गुनाह है।

(चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 20)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं : "**मेरी हर ज़िम्मेदार इस्लामी भाई की ख़िदमत में आ़जिज़ाना इल्तिजा है कि जिस को चन्दा या क़ुरबानी की खालें वुसूल करने की इजाज़त दें उस की शरई़ मसाइल में तरबियत भी फ़रमाएं।**" फ़तावा रज़विय्या और बहारे शरीअ़त वग़ैरा मुबारक किताबें इन मसाइल से मालामाल हैं इन का मुत़ालआ़ किया जाए। नीज़ येही किताब "**चन्दे के बारे में सुवाल जवाब**" पढ़ने की इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को सख़्त ताकीद कीजिये, जो मस्अला समझ में न आए उसे अपनी अटकल से ह़ल करने की भूल करने के बजाए उ़लमाए अहले सुन्नत से रुजूअ़ कीजिये। अगर दावते इस्लामी का हर ज़ैली सत़ह़ का ज़िम्मेदार इस्लामी भाई (और

इस्लामी बहन) अपनी और अपने मातहतों की तरबियत का बेड़ा उठा ले तो اِنْ شَآءَاللّٰه लाखों इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की तरबियत हो जाएगी। इस सिल्सिले में ऊपर सत्ह के ज़िम्मेदारों को मिल कर "मदनी तहरीक" चलानी होगी।

(चन्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 43)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

टिड्डी की टांग में धागा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दूसरे की चीज़ बग़ैर इजाज़त इस्तिमाल करना शरअ़न जाइज़ नहीं। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बचपन ही से ना पसन्दीदा और ग़ैर शरई कामों से बचते थे, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : मैं ने बचपन में देखा कि बाज़ बच्चे ऊंट गाड़ी या घोड़ा गाड़ी पर मालिक की इजाज़त के बग़ैर बैठ जाते तो सुवारी का मालिक चाबुक मारता जिस से गिरने का ख़तरा भी होता था। मैं कभी ऊंट गाड़ी पर इजाज़त ले कर बैठ जाता क्यूंकि ऊंट गाड़ी ख़ाली जा रही होती थी और यूं मेरा पैदल सफ़र न होता और वक़्त बच जाता। ऐसे ही बाज़ बच्चे टिड्डी (Grasshopper) के गले में धागा बांध कर उड़ाते थे, जिस से वोह तड़पती और बच्चों को मज़ा आता था और कुछ बड़े लड़के इस की टांग में डोरी डाल कर बेचते थे जिस की वज्ह से उस की टांग टूट जाती थी।

(माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, जुलाई 2024, स. 19)

जानवर पर ज़ुल्म से बचें

टिड्डी एक उड़ने वाला कीड़ा है, येह वोह ह़लाल जानवर है जो बग़ैर ज़ब्ह के खाना ह़लाल है जैसा कि मछली। याद रखिये ! इन्सान ने नाह़क़ किसी जानवर को मारा या उसे भूका प्यासा रखा तो क़ियामत के दिन उस से इसी की मिस्ल बदला लिया जाएगा जो उस ने जानवर पर ज़ुल्म किया या उसे भूका रखा। जानवर पर ज़ुल्म करना सख़्त गुनाह का काम है और मज़लूम जानवर की बद्दुआ क़बूल होती

है। उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : जानवर पर ज़ुल्म करना इन्सान पर ज़ुल्म करने से ज़ियादा गुनाह है (मिरआतुल मनाजीह़, 5/161) क्यूंकि इन्सान तो किसी से अपना दुख दर्द कह सकता है, बे ज़बान जानवर किस से कहे ? बल्कि उस का तमाशा भी न देखा जाए क्यूंकि मह़ज़ ह़ज़्ज़े नफ़्स (यानी मज़ा लेने) की ख़ातिर ऐसे जानवर के गिर्द घेरा डालना, उस के तड़पने फड़कने से लुत्फ़ अन्दोज़ होना, हंसना, क़हक़हे बुलन्द करना और इस का तमाशा बनाना सरासर ग़फ़्लत की अ़लामत है। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बच्चों को नसीह़त करते हुए फ़रमाते हैं :

मत कुत्ते बिल्ली को मारो तड़पेंगे बेचारे बच्चो !
कीड़ों को बेकार न मारो अच्छे बच्चो ! प्यारे बच्चो !
च्यूंटी को बेकार न मारो अच्छे बच्चों ! प्यारे बच्चो !

(वसाइले फ़िरदौस, स. 48)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

रात के बचे हुए खाने का ह़ल

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बचपन में घर में अगर रात का खाना बच जाता तो वोह फ़क़ीरों को दे दिया जाता था क्यूंकि उस वक़्त फ़्रीज तो क्या फ़्रीज का नाम नहीं सुना था लिहाज़ा बचा हुवा खाना कहां रखा जाता ? बाज़ लोग बचा हुवा खाना घर के बाहर खुले आस्मान के नीचे किसी खुली जगह में हवा में रस्सी वग़ैरा के साथ लटका देते या लोहे के बने छींकों (या पिंजरे) में रखते ताकि हवा लगती रहे और खाना कल तक चल जाए, फिर जब फ़्रीज मुआ़शरे में आ़म हुवा तो लोग बचे हुए खानों को उन में जमा करने लगे।

(मदनी मुज़ाकरा : 26 रबीउ़ल अव्वल 1441, 23 नवम्बर 2019)

मुल्क में फ़्रीज (रेफ़्रिजरेटर) किसी एक ख़ास साल में अचानक आ़म नहीं हुवा, बल्कि आहिस्ता आहिस्ता 1950 और 1960 की दहाइयों में घरों में आना

शुरूअ़ हुवा। इब्तिदा में येह ज़ियादा तर इम्पोर्टेड होते थे और सिर्फ़ बड़े शहरों और ख़ुशहाल घरों में मिलते थे। 1976 और 1980 में चन्द कम्पनियों ने मुल्क में फ़्रीज की मक़ामी पैदावार शुरूअ़ की जिस से फ़्रीज आ़म घरों तक ज़ियादा पहुंचने लगा।

ब्लैक एन्ड व्हाइट टीवी की नुहूसत से घर घर सिनेमा घर का सफ़र

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बचपन में रेडियो था फिर जब ब्लेक एन्ड व्हाइट टीवी की नुहूसत आई तो बड़े बड़े मैदानों में टीवी लगाया जाता और टिकट ख़रीद कर लोग इस पर फ़िल्में देखने जाते, कुछ अ़र्से के बाद टीवी रंगीन हो गया मगर अमीरे अहले सुन्नत ने कभी टीवी पर कभी कोई प्रोग्राम देखा न सुनने के लिये किसी जगह गए, वक़्त के साथ साथ आहिस्ता आहिस्ता बुराई में इज़ाफ़ा होता चला गया, फिर इत्तिलाअ़ मिली की हुकूमत ने वीसी आर के कई हज़ार लाइसन्स जारी कर दिये हैं, यूं फ़िल्मों ने गुनाहों का बाज़ार गर्म किया और अब इन्टरनेट, स्मार्ट फ़ोन के ज़रीए हर चीज़ वन क्लिक पर है, गोया घर घर सिनेमा की बजाए हर जेब में ऐसे आलात मौजूद हैं कि जो जो चाहे देख और सुन सकता है। अल्लाह पाक हमें हमेशा गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

(जारी है...)

اِن شاءَ اللہ الکریم दूसरी क़िस्त बनाम "अमीरे अहले सुन्नत के बचपन के वाक़िआ़त" में आप पढ़ेंगे : मुर्ग़ी और बेवुक़ूफ़ कबूतर की अंग्रेज़ी कहानी अमीरे अहले सुन्नत की ज़बानी, एक पहलवान की इ़ब्रतनाक मौत, किसान के ग्यारह बेटों का वाक़िआ़ और आ़शिक़े आला हज़रत, अमीरे अहले सुन्नत को आला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का पहला तआ़रुफ़ समेत दीगर वाक़िआ़त.....

अगले हफ़्ते का रिसाला

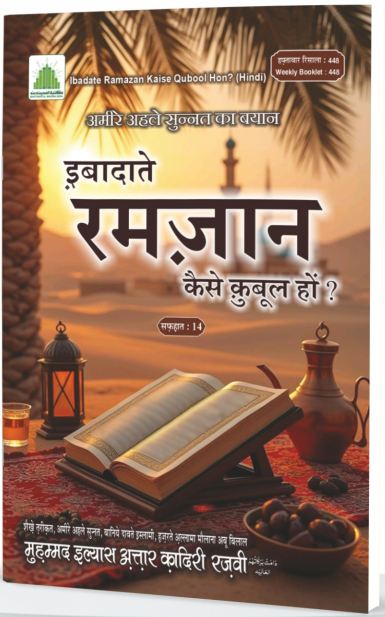

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025